कुमारी चम्पा
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज

B.A Part-I
हिन्दी रचना

प्रश्न:- भिक्षुक शीर्षक कविता का भावार्थ लिखें?

उत्तर:- छायावाद के प्रमुख चार कवियों में एक महाप्राण सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला हिन्दी साहित्य के युगान्तरकारी कवि माने जाते हैं। उनकी रचनाओं में तत्कालीन मानव की पीड़ा, परतंत्रता एवं परवसता के प्रति उत्पन्न तीव्र आक्रोश की ध्वनि, अन्याय एवं असमानता के प्रति प्रलयंकारी विद्रोह की घोषणा और विषमताओं विभेदों एवं विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करने की तीव्र गर्जना सुनायी पड़ती है।

'भिक्षुक' कविवर निराला की सर्वाधिक सरल भाषा में लिखी हुई सर्वाधिक मार्मिक कविताओं में उल्लेखनीय है। इसके माध्यम से उन्होंने अस्थिकंकाल जैसे क्षीणकाय दीन-हीन एवं लाचार भिखारी एवं उसके दो मासूम भिखमंगे बच्चों का अत्यंत कारुणिक चित्रांकण किया है। संभवत: निराला जी हिन्दी के ऐसे प्रथम कवि थे जिन्होंने भिक्षुक जैसे उपेक्षित तिरस्कृत एवं विवश व्यक्ति के प्रति सर्वप्रथम गहरी संवेदना व्यक्त की है।

प्रस्तुत कविता के प्रारंभ में उन्होंने एक ऐसे दीन हीन, लाचार एवं क्षुधानल में जलते हुए भिक्षुक का चित्रण किया है जिसके दोनों पैरों में चलने फिरने की शक्ति का सर्वथा आभाव है फिरभी वह एक टेढ़ी मेढ़ी छड़ी के सहारे किसी प्रकार गली में आता हुआ दिखायी पड़ जाता है। उसकी दीनता विद्रूपता एवं अतिशय दैनिय दशा देखकर निराला का कवि हृदय विगलित ही नहीं विदीर्ण हो जाता है। निराला ने उस भिखारी की मुख मुद्रा में पछताने की आभा देखी है। सदैव जीवन मे समर्थ बनकर कुछ ना कर पाने का पश्चाताप उसके हृदय को व्यथित करता रहता है। किन्तु अब पछताए होत क्या जब चिड़ियन ने चुग खेत लिया। अब उसके शरीर में बल नहीं रहा और

Scanned with CamScanner

Date

हाथों में काम करने की क्षमता नहीं रही अतः शेष जीवन जीने के लिए भिक्षाटन ही एक मात्र सहारा है निराला ने उसकी दीन दुर्बल काया का अत्यंत करुणिक शब्दों में चित्रण करते हुए लिखा है —

" पेट पीठ दोनों हैं मिलकर एक
चल रहा लकुटिया टेक
मुट्ठी भर दाने को
भूख मिटाने को
मुहफटी पुरानी झोली को फैलाता
वह आता — "

अर्थात निरंतर क्षुधानल में जलते रहने के कारण उसकी अंतड़ियाँ सूख गयीं हैं। पेट धसकर इस प्रकार पीठ से सट गया है कि दोनों एकाकार हो गए हैं। फिर भी अपनी उदराग्नि की भीषण ज्वाला को शांत करने के लिए मुट्ठी भर अनाज प्राप्त करने की कामना से वह मुहफटी पुरानी झोली को फैलाता हुआ चलता रहता है।

निराला ने उस भिखारी का निःसंग चित्रण न कर उसके साथ उसके दो मासूम छोटे बच्चों का भी वर्णन किया है। दोनों बच्चे गरीबी और भूख के मारे हुए हैं। दोनों जठरानल से बेचैन हैं अतः उनके उदर शूल के लक्षण उनके चेहरों पर साफ झलक रहे हैं। वे अपने बाएँ हाथ से पेट को मलते हुए चलते हैं जबकि दाहिना हाथ कुछ पाने की आशा में आगे बढ़ाते हुए चलते हैं। यहाँ कवि ने उन दोनों मासूम बच्चों की विवशता का ही चित्रण नहीं किया है बल्कि समाज के सम्पन्न लोगों की निर्ममता का भी चित्रांकण किया है। उन मासूम बच्चों की दैनिय दशा ~~xxx~~ पर तरस खाकर दाता भाग्यविधाता (सम्पन्न लोग) उन्हें भीख के बदले उपेक्षा तिरस्कार एवं दुत्कार देते हैं। अतः वे बच्चे उस दीनावस्था में भी खून के घूंट पीने के लिये

Date

अभिव्यक्त है।

इसके बाद की दो पंक्तियों में निराला ने मानवीय संवेदना को पूरी तरह झकझोर देने वाले वस्तु सत्य का चित्रांकन करते हुए लिखा है —

"चाट रहे जूठी पत्तल वे कभी सड़क पर खड़े हुए
और झपट लेने को उनसे कुत्ते भी हैं अड़े हुए।"

इन पंक्तियों के माध्यम से निराला जी ने उन दीन हीन भिखारियों की लाचारी की चरमसीमा दिखलायी है। वे मासूम बच्चे दूध की उल्टी करने और जेब में भूँजों को लापरवाही के साथ सिड़कने के उम्र में गली कूँचों और सड़कों पर फेंके हुए जूठे पत्तल चाटने के लिए विवश हैं वहीं दूसरी ओर उन जूठे पत्तलों पर सदैव से अपना अधिकार समझनेवाले कुत्ते उनके हाथों से उन जूठे पत्तलों को झपटर लेने के लिए खड़े हो गए हैं। इन पंक्तियों के माध्यम से निराला ने मनुष्य की अधोगति की चरमसीमा दिखलायी है। भिखारी में अपने अधिकारों के प्रति चेतनशीलता तक का पूर्णतः आभाव है। वे शोषक वर्ग से अपना अधिकार पाने के लिए संघर्ष करने की बात सोच तक नहीं सकते। जबकि उनकी तुलना में कुत्ते अपने अधिकार के प्रति पूर्णतः चेतनशील एवं सक्रिय हैं।

वस्तुतः कविता अत्यंत सरल भाषा में लिखी गयी है। यह छन्दमुक्त कविता है। किन्तु इसके अंतर्गत भी निराला की ऐसी अन्य कविताओं की तरह तुकान्त पद-योजना हुई है। बिम्बविधान की दृष्टि से यह कविता सर्वथा उल्लेखनीय है। इसके अंतर्गत निराला ने मुख्यतः तीन बिम्बों का निर्माण किया है। प्रथम बिम्ब बूढ़े भिखारी का है दूसरा बिम्ब उसके दो मासूम बच्चों से सम्बन्धित है और तीसरा बिम्ब उसके हाथ से पत्तल झपटने को अड़े हुए कुत्तों से सम्बन्धित है। कवि ने भिक्षुक कविता के माध्यम से समाज के सुसुप्त वर्ग को जाग्रत करने का कार्य

Date

किया है।

अन्तिम बिम्ब के माध्यम से निराला ने प्रमाणित किया है कि ये भिक्षुक कुत्तों से भी गए बीते हैं क्योंकि इनमें विरोध तक करने की भावना का सर्वथा अभाव है। कुल मिलाकर यह हिन्दी की अत्यंत मार्मिक कविताओं में से एक है।

Scanned with CamScanner